तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

जुलाई-2020

सप्तगिरि का परिशिष्ट

श्रीहरि सोपानोत्सव में बालभजनबृंद

विषयसूची

हिन्दू देवता	श्री सुदर्शनजी का चरित्र सौ.विजया कमलकिशोर तापडिया	04
पन्निद्दराल्वार	श्री शठकोप स्वामीजी (नम्माल्वार) श्री अतुला श्रीराम मालपाणी	06
कन्नड हरिदासवरेण्य	श्री राघवेन्द्र स्वामी श्रीमती सी.मंजुला	08
चित्रकथा	श्रीहरि के ही ससुर बने!... तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी चित्र - श्री पी.शिवप्रसाद	10
बालनीति	आध्यात्मिक पुस्तक पठन - एक दिव्य औषध श्री सी.सुधाकर रेड्डी	14
विशिष्ट बालिका		16
'क्विज'	श्रीमती एन.मनोरमा	17
चित्रलेखन		18

मुखचित्र - श्री व्यासमहर्षि।

चौथा कवर पृष्ठ - श्री वेंकटेश्वरस्वामी।

श्री सुदर्शनजी का चरित्र

- सौ.विजया कमलकिशोर तापडिया

मिथुन मास, चित्ता नक्षत्र में आपका प्रादुर्भाव हुआ है। जीव पाँच प्रकार के होते हैं। नित्य, मुक्त, कैवल्य, मुमुक्षु तथा बद्ध। श्री सुदर्शन आल्वार नित्य जीव की कोटि में स्थित है। सदा के लिए श्रीमन्नारायण भगवान के बाएँ हाथ में विराजमान रहते हैं।

श्रीरामानुज संप्रदाय में दीक्षा देते समय आचार्य अपने शिष्य की भुजा पर चक्र और शंख अंकित करते है। शरणागत होने पर शिष्य के सर्व प्रकार की रक्षा का भार सुदर्शन आल्वार हर क्षण करते रहते हैं।

परम भागवत चक्रवर्ती राजा अम्बरीषजी की कथा प्रसिद्ध है, जिसमें दुर्वास ऋषि से बदला लेने चक्रराज प्रगट होकर राजा अम्बरीषजी की रक्षा करते है।

ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां शुक्रवासरे।
चित्त नक्षत्रके सौम्ये लग्ने कर्कटके शुभे।
रक्षार्थम सर्व-लोकस्य कल्पादौ कृपया स्वयम्।
जनार्दनश्-चक्ररूपी विष्णुरंशादवातरत्।।

भगवान के पार्षद के रूप में इनका अवतार हुआ है। भगवान की आज्ञानुसार सदैव शरणागतों की रक्षा के लिए तत्पर रहते है।

यस्मिन्विन्यस्य भारं विजयिनि जगतां जंगमस्थावराणां।
लक्ष्मीनारायणाख्यं मिथुनमनुभवत्यत्युदारणविहारान।।
आरोग्यं भूतिमायुः कृतमिह बहुना यद्यदास्थापदं वः।
तत्तन्नित्यं समस्तं दिशतु स पुरुषो दिव्यहेत्यक्षवर्ती।।

अर्थात्- श्रीलक्ष्मीनारायण भगवान का युगल विग्रह, स्थावर-जंगमरूप समस्त विश्व की रक्षा, शिक्षा आदि के समस्त भारों को, जिन विजेता श्री सुदर्शन पुरुष

पर निर्भरकर और स्वयं निश्चिंत हो निरतिशय आनंद विहार का अनुभव किया करता है। सुदर्शन चक्र मध्यवर्ती वे दिव्य पुरुष आपके लिए आरोग्य, ऐश्वर्य तथा आयुष्य प्रदान करें। सर्व शक्तिमान उनके विषय में इतना ही कहना पर्याप्त है कि वे आपके समस्त अभीष्ट पदार्थों को नित्यप्रति तत्क्षण प्रदान करते रहें।

गजेंद्रमोक्ष - गजेंद्र अपने पैर को पकड़ने वाले मगर से लड़लड़ कर थक गया और अंत में भगवान से अपनी रक्षा करने की प्रार्थना किया, गजेंद्र की प्रार्थना ''अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणम मम'' की प्रार्थना सुनकर श्री महाविष्णु जैसे की वैसे वैकुण्ठ छोड़कर आगए और स्वामी के परिजन उनके पीछे-पीछे आए। स्वामी ने अपना सुदर्शन चक्र का प्रयोग करके मगर के सिर को काटकर गजेंद्र की रक्षा की और मगर को अपनी शाप से मुक्ति दिया।

चक्रस्नान - तिरुमल में चक्रत्ताल्वार का चक्रस्नान वर्ष में चार बार किया जाता है, यानी वार्षिक ब्रह्मोत्सव की समाप्ति पर, रथसप्तमी के दिन, वैकुंठ एकादशी के दिन तथा अनंतचतुर्दशी पर्व दिन पर। उपर्युक्त दिनों में चक्रत्ताल्वार को मंदिर से शोभा यात्रा में श्री स्वामिपुष्करिणी तक ले आते हैं और वहाँ उनका अभिषेक (पुष्करिणी के कूल पर) किया जाता है और उसके उपरांत सुदर्शन चक्र को पुष्करिणी में डुबकी लगाते हुए चक्रस्नान कराया जाता है।

उपसंहार - द्रविड़ भक्ति साहित्य को कई आल्वारों ने सुदर्शन चक्र के स्तोत्र, शतक, स्तुति आदि से परिपुष्ट किया। इन स्तोत्रों को पढ़कर भक्तगण कई रोगों से, समस्याओं से मुक्त हो रहे हैं और भगवान के असीम कृपा के पात्र हो रहे हैं।

शिक्षा - भगवान की नित्य सेवा में सदा के लिये तैयार रहना और भगवान के भक्तों में अत्यंत प्रेम बनाए रखना।

जय जय श्री सुदर्शन!

श्री शठकोप स्वामीजी
(नम्माल्वार)

पत्रि द्द राल्वार

- श्री अतुला श्रीराम मालपाणी

वृषभे तु विशाखायां कुरुकापुरिकारिजम।
पान्ड्यदेशे कलेरादौ शठारिं सैन्यपं भजे।।

माता पिता युवतयस्तनया विभूतिः
सर्वं यदेव नियमेन मदन्वयानाम।

आद्यस्य नः कुलपतेर्बकुलाभिरामं,
श्रीमत्तदङ्घ्रियुगलं प्रणमामि मूर्ध्ना।।

आचार्य - श्रीविष्वक्सेनजी

शिष्य - श्री मधुरकवि स्वामीजी

अवतार स्थल - आल्वार तिरुनगरी

प्रबंध रचना - तिरुवायमोलि (सहस्रगीति), तिरुविरुत्तम, तिरुवासिरियम, पेरिय तिरुवन्दादि।

श्री शठकोप स्वामीजी को नम्माल्वार, मारन, परांकुश, वकुलाभरण, वकुळाभीराम, मागीलमारन, शठजित, कुरुगुरनम्बी, प्रपन्नजन कुटस्थर, श्रीवैष्णव कुलपति इत्यादि नामों से जाना जाता है।

श्री शठकोप स्वामीजी को श्रीविश्वक्सेनजी का अवतार और भगवान के चरणारविन्दों के रूप में भी जाना जाता है।

कलियुग प्रारंभ होते ही ४३वें दिन शठकोप स्वामीजी का अवतार हुआ। स्वामीजी ३२ साल तक इस लीला विभूति में विराजमान थे, आजन्म तक इन्होंने भगवत अनुभव किया, संसारिक चीजों से पूर्ण रूप से निर्लिप्त थे। ३२ साल तक बिना अन्न, जल ग्रहण किये श्रीतिन्त्रिणी वृक्ष के नीचे विराजमान थे। यह ५००० साल पुराना वृक्ष है। जिसके दर्शन आज भी हम लोग आल्वार तिरुनगरि में कर सकते है। इस वृक्ष को शेषजी का अवतार माना जाता है।

गुरुपरम्परा में चतुर्थ स्थान पर विराजमान आचार्य है। आल्वारों की गोष्ठी में भी विराजमान है। श्री शठकोप स्वामीजी आल्वारों में अवयवी है और बाकी सभी आल्वार उनके अवयव के रूप में माने जाते है। श्री शठकोप स्वामीजी द्वारा विरचित चार प्रबंध में चार वेदों का सार बताया गया है। १) तिरुविरुत्तम - ऋग्वेद का सार है। २) तिरुवासीरियम - यजुर्वेद का सार है। ३) पेरिय तिरुवंदादि - अथर्वणवेद का सार है। ४) तिरुवाय्मोली (सहस्रगीति) - सामवेद का सार है।

बाकी सभी आल्वारों के दिव्यप्रबंधों को वेदों का अंश माना गया है। ४००० दिव्यप्रबंधों में तिरुवाय्मोली (सहस्रगीति) का स्थान अत्यंत विशेष है। सहस्रगीति की प्रमुखतः ५ व्याख्याएँ उपलब्ध है। जिसमें कलिवैरीदास स्वामीजी द्वारा की गयी ३६००० पड़ी व्याख्यान बहुत ही विशेष है, जिसका कालक्षेप स्वयं श्रीरंगनाथ भगवान ने वरवरमुनि स्वामीजी के मुखारविंद से सुना। सहस्रगीति का अनुसंधान सभी मांगलिक कार्यक्रमों के प्रारंभ में और अमांगलिक कार्यक्रमों के समापन में किया जाता है।

अनेक दिव्यदेशों से भगवान आकर श्रीतिन्त्रिणी वृक्ष के ऊपर विराजमान होकर आल्वार के मंगलाशासन के लिए तरस थे। पूर्वाचार्य अपने व्याख्यानों में बताते है की श्री शठकोप स्वामीजी में अनेक महान विभूतियों (श्रीदेवी, भूदेवी, गोपिका, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, दशरथ, हनुमान, कौसल्या, विभीषण, अर्जुन) के सभी विशेष गुण विद्यमान है। परंतु इन महान विभूतियों में श्री शठकोप स्वामीजी के कुछ अल्प गुण ही विद्यमान है। इतने महान आल्वार है श्री शठकोप स्वामीजी।

श्री शठकोप स्वामीजी का अवतार आल्वार तिरुनगरी में ताम्रपर्णी नदी के तट पर हुआ, जिससे ताम्रपर्णी नदी का वैभव गंगा, सरस्वती, यमुना से भी अधिक माना जाता है। धनुर्मास में शुक्ल पक्ष एकादशी को स्वामीजी ने इस लीला विभूति से परमपद के लिए प्रस्थान किया। जिसे वैकुण्ठ एकादशी उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

श्री शठकोप स्वामीजी का मंगल हो!

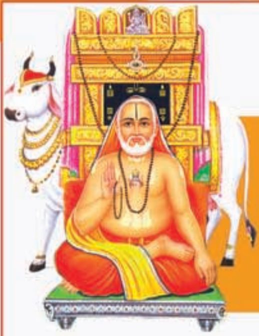

कन्नड
हरिदासवरेण्य

श्री राघवेन्द्र स्वामी

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु

हिन्दी अनुवाद : श्रीमती सी.मंजुला

बच्चों! ‘‘इन्दु विनगे गोविंद निन्नय पादार विंदवतोरमुकुंदने’’ नाम के भैरवी राग कृति को न गाने वाले संगीतकार नहीं होते हैं। इस कृति को शायद अनसुना बताया जाता है। अत्यंत उत्कृष्ठ, भक्ति रस ज्ञानवर्धक गीत के साथ, कम से कम कहने के लिए, नमी करवाने की तरह रहा यह गीत हरिदास साहित्य के लिए मोती पदक की तरह कहा जा सकता है। यह गीत श्री श्री श्री राघवेन्द्र तीर्थ गुरु सम्राट द्वारा लिखा गया।

मंत्रालय महाक्षेत्र के बृंदावन में विराजमान होते हुए आश्रित भक्तों के प्रति कामधेनु कल्पवृक्ष चिंतामणारूढ होकर प्रतिष्ठित प्रस्तावक हो गया। तमिलनाडु के कुंभकोण प्रांत के निवासी वीणा कृष्ण भट्ट, इन्होंने श्रीकृष्णदेवराय को वीणावाद की शिक्षा देकर उनसे मोतियों के हार को गुरु दक्षिणा के रूप में प्राप्त किए इनके पोते वीणा तिम्मण भट्ट के पुत्र श्री राघवेन्द्र स्वामीजी यह है। उनकी माताजी का नाम गोपिकांब था। तिरुपति श्री वेंकटेश्वर स्वामी के अनुग्रह फल के रूप में जन्म हुआ वेंकट नायक, जिन्होंने बचपन में अपने पिता को खो दिया, भाई और जीजा के पालन-पोषण में बड़े होकर, उनके पास ही काव्य, नाटकलंकार, शास्त्रादियों को पर्याप्त मात्रा में अभ्यास करके उसके बाद जगत के प्रसिद्ध श्री विजईन्द्र तीर्थ कर कमल संध्यात श्री सुदीन्द्र तीर्थों के पास वेदांत की सीख को एवं द्वैत सिद्धांतादि ग्रंथों का अध्ययन किया। जल्द ही अद्वितीय बहुमुखी प्रतिभा संपन्न होकर, महान विद्वान गुरु के पास आते हैं, वाद-विवाद करनेवालों को अपने सशास्त्रीय मार्ग में वाद-विवाद करके जीतने लगा। उनकी अद्वितीय पांडित्य को, गुरुभक्ति जिसके जरिए देव भक्ति, धार्मिक चिंतन, नित्यानित्य निष्टा गरिष्टत्व को अवलोकन

किए हुए गुरु श्री सुदीन्द्र तीर्थ ने श्रीमन्मद्वाचार्य मूल महा संस्थान पर प्रभुत्व के लिए पीठाधीश बनाने के लिए दृढ़ संकल्प किया।

वेंकटनाथाचार्य को सरस्वती बाई नाम की पत्नी, लक्ष्मी नारायण नाम के पुत्र रहने की वजह से पहले सन्यास स्वीकार करने के लिए मना करने पर वाग्देवी सपने में दिखाकर सन्यास प्राप्त करने के लिए कहा। उसके दौरान वेंकटनाथाचार्य ने वाग्देवी की इच्छानुसार, गुरुओं के अभिमतानुसार पत्नी एवं बेटे को बड़े भाई को सौंपकर तंजाऊर के रघुनाथ नायक के समक्ष में देखनेवालों के लिए देवेन्द्र के राज तिलक जैसे बड़ी शान से श्री सुदीन्द्र तीर्थों के हाथों से सन्यास ग्रहण किया। उस समय श्री सुद्रीन्द्र तीर्थ ने वेंकटनाथजी को 'श्री राघवेन्द्र तीर्थ' नामकरण करने की वजह से उस दिन से 'श्री राघवेन्द्र स्वामी' के नाम से दुनिया में प्रसिद्ध होकर अनेक ग्रंथों की रचना की। उनमें से 'परिमल ग्रंथ' अत्यंत प्रसिद्ध होने के कारण इनको 'परिमलाचार्य' नाम के दूसरे नाम भी आया था। इनकी रचना 'खंडार्थ' को ही उस समय विद्यापीठों में पठन-पाठ के रूप में अध्ययन किया गया। इनके द्वारा रचित 'प्रातः संकल्प गद्य' अति विख्यात सुस्वर पाठ ग्रंथ हो गया। श्री राघवेन्द्र स्वामी अपने जीवन में कई तरीकों से अनेक लोगों को आशीर्वाद देने की वजह से, वे सब लोगों के प्रति चमत्कार बने। आम के रस में गिरने से एक छोटे बच्चे की मृत्यु हो गई, उस बच्चे को कमंडल में रहे उदकों से संप्रोक्षण करके बचाया गया, आदोनी नवाब के द्वारा लाए गए मांसादियों को फलों के रूप में बदलाव किया गया, एक यज्ञ भट्टी में रत्न को आग में जला दिया गया था और बिना किसी दोष के वापस आने का दिखाया गया, एक दो नहीं अनेक महिमाओं को दिखाए हुए इनको उस समय के राजा-महाराजाओं से कई उपाधियाँ, जमीन, सोना, अभिषेकादि गौरवों को प्राप्त करके आज भी मंत्रालय के बृन्दावन में रहकर सभी की रक्षा कर रहे हैं।

चित्रकथा

श्रीहरि के ही ससुर बने!...

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्र - श्री पी.शिवप्रसाद

श्रीहरि के लिए समर्पित किए जानेवाले पुष्पकैंकर्य के लिए, अनंताल्वान, श्रीवेंकटाचल पर अत्यंत सुंदर पुष्पवाटिका को बनाकर, उसकी देख-रेख कर रहे हैं। उस वाटिका से फूलों को चुन-चुनकर रंगीन मालाओं को पिरोना तथा उन्हें स्वामी को अलंकृत करना उनका नित्यकृत्य बन गया। एक दिन...

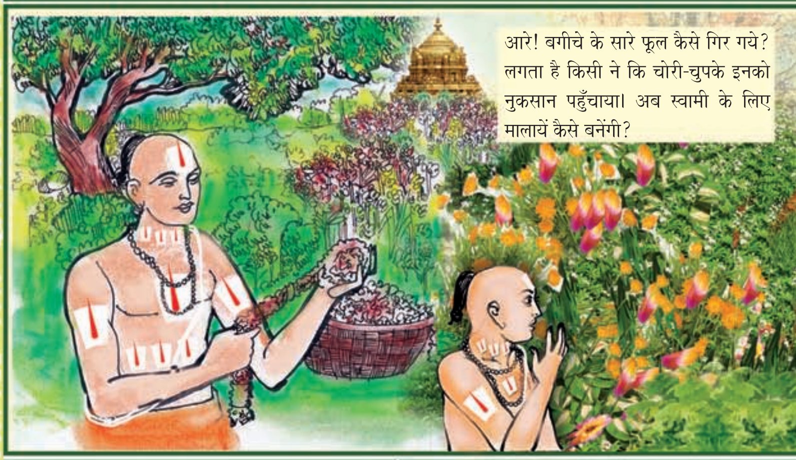

अगली रात को, चोर को पकडने के लिए, अनंताल्वान बगीचे के एक कोने में छिपकर बैठे। एक नवदंपति बडे भोग विलासपूर्वक उस बगीचे में प्रवेश करते हैं।

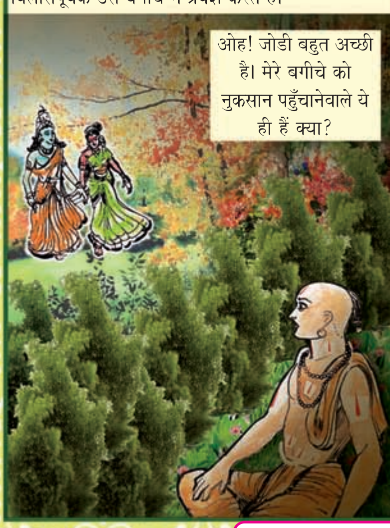

आगत दोनों बगीचे में बड़े चाव के साथ, फूलों को तोड़कर, उन्हें सूँघते, नीचे गिराते हुए इधर-उधर घूम रहे हैं।

उस जोडी को देखकर अनंताल्वान गुस्से में आगये।
इस नटखट दंपति को सबक सिखानी है...
अरे! आप कौन-हो? बगीचे को नुकसान क्यों पहुँचा रहे हो?
हाँ, ठीक है स्वामी!
हे लक्ष्मी! उधर देख, माली हमें पकडने इसी ओर आ रहा है, भागो, जल्दी भागो...
भाग-दौड़नेवाले दोनों को अनंताल्वान ने पीछा करते हुए पकड़ लिया। लेकिन स्वामी वहाँ से भाग निकले और अकेली लक्ष्मी माली के हाथों पकड़ी गई।
आप मुझे अपनी पुत्री समझकर कृपा करके छोड़ दीजिए। मैं इस ओर कभी नहीं आऊँगी।
चुप! मैं तुझे अपने अंगवस्त्र से इस पेड़ से बांध दूँगा। तुम्हारा पति आकर तुम्हें छुड़ायेगा।

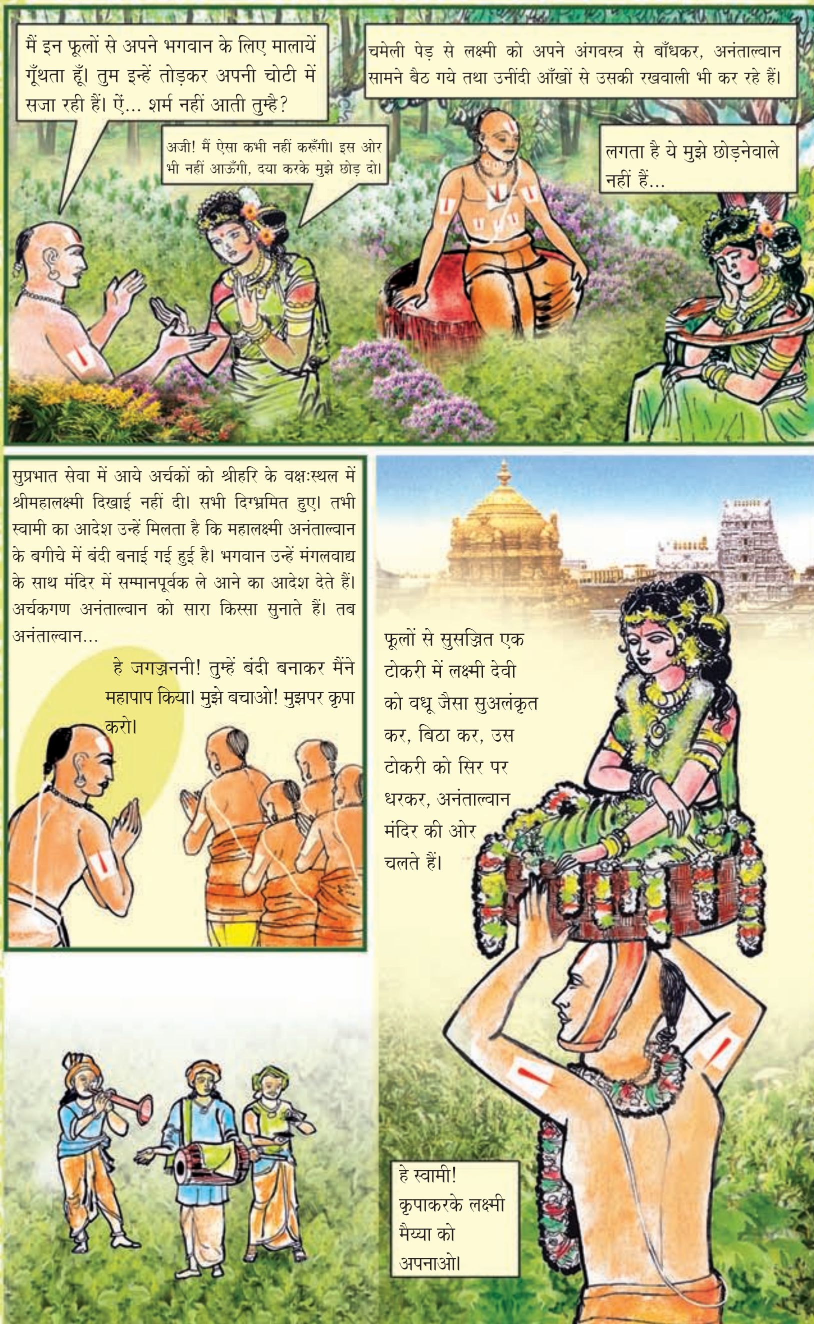
मैं इन फूलों से अपने भगवान के लिए मालायें गूँथता हूँ। तुम इन्हें तोड़कर अपनी चोटी में सजा रही हैं। ऐं... शर्म नहीं आती तुम्है?
अजी! मैं ऐसा कभी नहीं करूँगी। इस ओर भी नहीं आऊँगी, दया करके मुझे छोड़ दो।
चमेली पेड़ से लक्ष्मी को अपने अंगवस्त्र से बाँधकर, अनंताल्वान सामने बैठ गये तथा उनींदी आँखों से उसकी रखवाली भी कर रहे हैं।
लगता है ये मुझे छोड़नेवाले नहीं हैं...
सुप्रभात सेवा में आये अर्चकों को श्रीहरि के वक्षःस्थल में श्रीमहालक्ष्मी दिखाई नहीं दी। सभी दिग्भ्रमित हुए। तभी स्वामी का आदेश उन्हें मिलता है कि महालक्ष्मी अनंताल्वान के बगीचे में बंदी बनाई गई हुई है। भगवान उन्हें मंगलवाद्य के साथ मंदिर में सम्मानपूर्वक ले आने का आदेश देते हैं। अर्चकगण अनंताल्वान को सारा किस्सा सुनाते हैं। तब अनंताल्वान...
हे जगज्ञननी! तुम्हें बंदी बनाकर मैंने महापाप किया। मुझे बचाओ! मुझपर कृपा करो।
फूलों से सुसज्जित एक टोकरी में लक्ष्मी देवी को वधू जैसा सुअलंकृत कर, बिठा कर, उस टोकरी को सिर पर धरकर, अनंताल्वान मंदिर की ओर चलते हैं।
हे स्वामी! कृपाकरके लक्ष्मी मैय्या को अपनाओ।

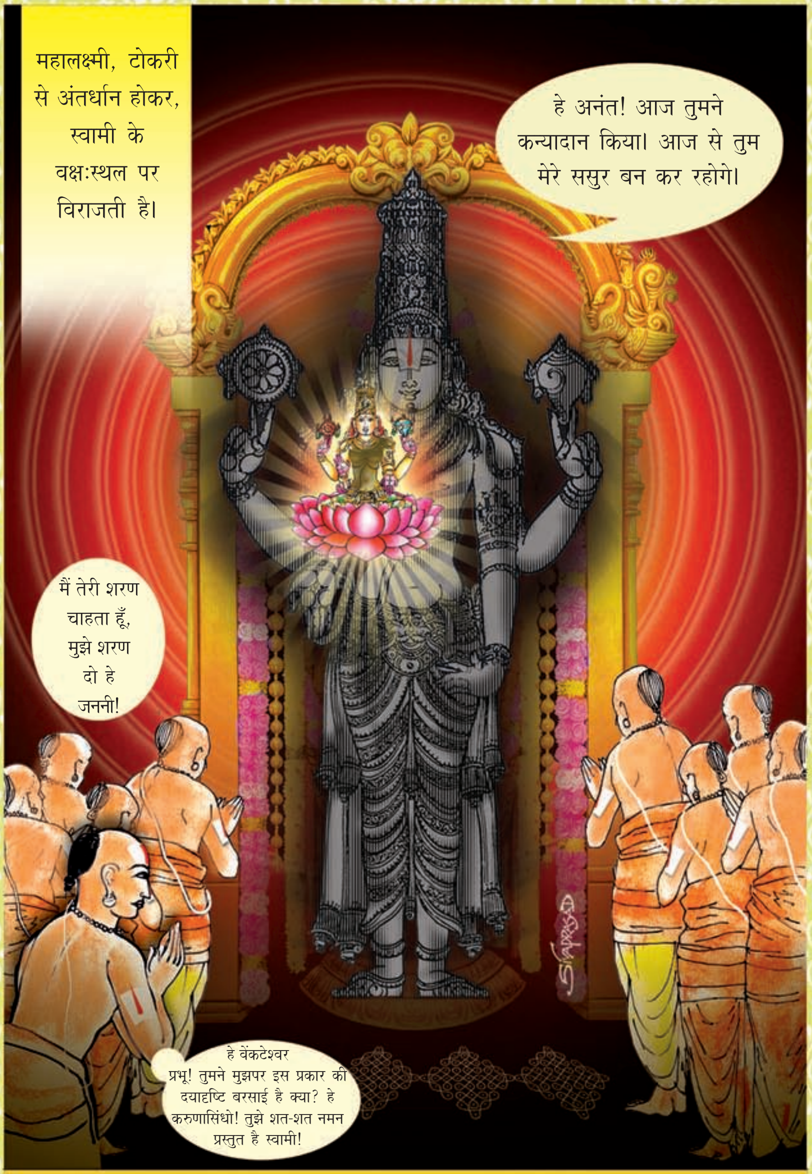

आगामी चित्र-कथा में श्री वेंकटेश्वर की एक अलग दिव्यलीला के वैभव का दर्शन करेंगे...

स्वस्ति।

आध्यात्मिक पुस्तक पठन एक दिव्य औषध

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

बच्चों! आप जानते है पुस्तक पठन एक कला है। चाहे पाठ्य-पुस्तक हो या आध्यात्मिक पुस्तक हो आजकल छात्रों में पुस्तक पठन की उत्सुकता दिन-ब-दिन घट रही हैं। इनके लिए अनेक कारण हो सकते हैं। टी.वी., सेलफोन एवं कंप्यूटर की वजह से बच्चों में पुस्तक पठन में बाधा उत्पन्न हो रही हैं। ज्यादतः उपर्युक्त उपकरणों के उपयोग करने की वजह से आँखों की रोशनी कम होती जा रही है।

पुस्तक को परम मित्र की तरह मानने वाले अपने जीवन को खुशगवार कर सकते हैं। छोटे बच्चों को पुस्तक पढ़ने की आदत सिखानी है। पढ़ते हुए बढ़नेवाला अपने जीवन को बेहतर कर सकता है। बाल साहित्य को बचपन में ही पढ़ने से दिमाग जागरूक होता है। कबीर के दोहे, वृन्द के दोहे एवं तुलसी के दोहे जीवन को आकार देनेवाली सत्य है। आसानी से सुनाई जानेवाली कविताएँ बच्चों के मानसिक विकास में योगदान कर सकती है। उनके व्यवहार को निर्देश करते है। पुस्तक ही गुरु है। पुस्तक-पठन से कई विषय सीख सकते हैं।

रामायण आदिकाव्य है। श्रद्धा से जो लोग रामायण पढ़ते है, वे श्रीराम की तरह जीवन बिताने की चाह रखते हैं। गलत करना चाहते तो पहले रामजी याद आते हैं। रामायण हमें यह सिखाती है कि हमें अपने निज जीवन में कैसे चलना है? मानवीय रिश्तों की आवश्यकता समझ में आती है। श्रीराम ने रामायण में भगवान की तरह व्यवहार नहीं किया। एक आदमी किस तरह जीवन बिताना है, उसको उदाहरण सहित दिखाया। जीवन में कष्ट आने पर, श्रीराम को स्मरण करने से- उनके दुःखों के सामने हमारे दुःख कितना है, इस तरह की भावना आकर, उन्हें सहने की ताकत आती है। रामायण कहती है कि आप चाहे कितनी भी कठिनाइयों का सामना, सत्य तथा धर्म को बिल्कुल न छोड़े। शक्तिशाली, धर्मज्ञ, कृतज्ञ और दृढ़ प्रकृति आदि श्रीराम के गुणों का वर्णन करते हुए रामायण हमें बताती है कि मनुष्य को कितना गुणवान होना चाहिए।

महाभारत धर्म को प्रचार करती है। महाभारत पंचमवेद के लिए प्रसिद्ध हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जैसे चतुर्विद पुरुषार्थों के साथ-साथ शास्त्रों के विषयों को सिखाया है। यह कहा जाता है कि महाभारत में जो मौजूद नहीं है, वह कही और

मौजूद नहीं है। महाभारत में ज्ञान का अथाह भंडार है। महाभारत जो सभी उम्र के लोगों के लिए आवश्यक नीति का उपदेश करती है, सच्चे दोस्त की तरह सलाह देती है।

भगवद्गीता जीवन का सार सिखती है। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि भगवद्गीता से परे व्यक्तित्व विकास की पुस्तक अभी तक नहीं आई है। यह साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया आत्म ज्ञान। जीवन के तरीके को हर आदमी अभ्यास करना चाहिए। जो लोग गीता को समझते है, वे तकलीफों को सामना कर सकते हैं। सुखों के लिए ज्यादतः आनंदित नहीं होते हैं। दुःखों के लिए ज्यादतः परेशान नही होते हैं। गीता आपको विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति देती है। भागवत भक्ति संबंधी विचार को सिखाती है। श्री महाविष्णु के दिव्य रूप को वर्णन करते हैं। अवतार पुरुष की लीलाओं को ऑखों के सामने दिखाने की चेष्टा करती है। पोतन भागवत (तेलुगु में) की कविताएँ मधुर हैं। मन को छूते हैं। मन को शांति देती है। भागवत मन को भगवताराधना की ओर विचलित करती है। श्रीकृष्ण की लीलाओं को पढ़कर न आनंदित होनेवाली कोई नहीं होंगे। मन परमानंद से अभिभूत होता है।

पुराणों को पढ़ने से आध्यात्मिक भाव चिंतन की आदत होती है। संकीर्ण भावनाओं को समाप्त कर दिया जाता है। भगवान के विविध रूपों के अलावा, अकेले भगवान की सच्चाई को समझा जाता है। जीवन बनाने का तरीका दिखाई दे रहा है। मन निर्मल हो जाता है। महात्माओं की आत्मकथाएँ मनुष्य को मनुष्य के रूप में जीने के लिए मार्ग दिखाते हैं। यह सलाह दी जाती है कि स्वार्थ को छोड दें। और सामाजिक कल्याण के लिए सहयोग देने कि लिए उपदेश देते हैं। आधुनिक साहित्य अच्छे और बुरे को चुनकर दिखाता है। सही रास्ता चुनने के लिए कहता है। पुस्तक पठन एक ऐसा उपकरण है, जो सभी उम्र के लोगों के मस्तिष्क को तेज करता है। अगर किताब पढ़ना एक आदत है तो अनावश्यक विचार हमें परेशान नहीं करते हैं। असाधारण प्रवृत्ति को रोकता है। स्वस्थ जीवन के लिए एक दिव्य औषध पुस्तक पठन।

नीति : टी.वी., सेलफोन तथा कंप्यूटर देखने में ज्यादा समय न गँवाकर पुस्तक-पठन में मन लगाने से बच्चों में नैतिक मूल्य एवं व्यक्तित्व विकास की उन्नति होगी।

विशिष्ट बालिका

नाम	:	अनघा.ए
जन्म	:	११ मई, २००७
कक्षा	:	नौवीं कक्षा
विद्यालय	:	महिलालयम स्कूल, अलुवा, केरला।
माताजी का नाम	:	श्रीमती वी.सुधा
पिताजी का नाम	:	श्री वी.अरुण कुमार
कौशल	:	शास्त्रीय संगीत, वायलिन और शास्त्रीय नृत्य (भरतनाट्यम्, मोहिनी अट्टम, कूचिपूडि)

भारतीय शास्त्रीय नृत्य और संगीत में विशेषज्ञ बनना और भारतीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देना।

शास्त्रीय संगीत :

अनघा ने तीसरी वर्ष की उम्र में शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू किया और गुरुआनी श्रीमती श्यामा हरिदास के मार्गदर्शन में अलुवा में एक समूह के रूप में मंच प्रदर्शन दे रही है। स्कूल स्तर पर उन्हें हल्के संगीत, शास्त्रीय संगीत और मधुर गीतों के लिए लगातार प्रथम पुरस्कार मिलता रहा है। उसने जिला स्तर के युवा उत्सवों में अपने स्कूल सी.बी.एस.ई. का प्रतिनिधित्व किया है।

शास्त्रीय यंत्र :

वह श्रीमती गीता परमेश्वरन के तहत में वायलिन सीख रही हैं।

शास्त्रीय नृत्य :

वह कलाड़ी के श्री शंकर स्कूल की गुरुआनी श्रीमती सुधा पीतांबरम के अधीन में शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम, मोहिनी अट्टम और कूचिपूड़ि सीख रही है। वह पिछले पांच वर्षों से नृत्य सीख रही है और स्कूल द्वारा आयोजित चार स्तरों के प्रामाणीकरण परीक्षा को मंजूरी दे दी है। उसका आरंगेट्रम वर्ष २०१७ में अंतराष्ट्रीय नृत्य समारोह में था। तब से वह २०१८ में चोट्टनिक्करा भगवती मंदिर में विभिन्न चरणों में अपने स्कूल के साथ प्रदर्शन कर रही है। नवरात्रि उत्सव के दौरान कोल्लूर मूकांबिका मंदिर, वर्ष २०१८ में गुरुवायुर कृष्ण मंदिर, कलाडी श्रीकृष्ण मंदिर और पल्लिपट्टुकाव देवी आलय, वार्षिक उत्सवों के दौरान अलुवा में प्रदर्शन दिया गया।

‘क्विज’

आयोजक - श्रीमती एन.मनोरमा

१) कुरुराजा के वंशजों का नाम क्या है?

अ) चंद्रवंश आ) सूर्यवंश

इ) कौरववंश ई) कोई नही

२) अर्जुन और सुभद्रा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम क्या है?

अ) अभिमन्यु आ) लक्ष्मण

इ) कर्ण ई) भीष्म

३) वाल्मीकि महर्षि द्वारा लिखित सुप्रसिद्ध ग्रंथ का नाम क्या है?

अ) महाभारत आ) भगवद्गीता

इ) रामायण ई) श्रीवेंकटाचलमाहात्म्यम्

४) सुब्रह्मण्यस्वामी अवतरित जन्मस्थान कहा?

अ) शरवन आ) काशी

इ) तिरुत्तणी ई) श्रीशैलम्

५) सुंदरकांड किस महापुरुष के नाम पर बनाता?

अ) जांबवंत आ) हनुमान

इ) लक्ष्मण ई) भरत

६) आदित्यहृदय स्तोत्र को भगवान श्रीरामजी को बताने वाली ऋषि कौन है?

अ) अगस्त्य आ) विश्वामित्र

इ) व्यासभगवान ई) बृहस्पति

७) महालक्ष्मीजी का जन्म कहा से हुआ था?

अ) क्षीरसागर आ) गंगानदी

इ) मानसरोवर ई) आकाश

जवाब - १) इ २) अ ३) इ ४) अ ५) आ ६) अ ७) अ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

श्रीहरि सोपानोत्सव में बालबालिकाएँ

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
printing on 30-07-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under
"RNI" No.10742, Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

नित्याय निरवद्याय सत्यानंद चिदात्मने।
सर्वांतरात्मने श्रीमद्वेंकटेशाय मंगलम्।।